देश दर्शन

पूर्ण संख्या—८०

विषय-सूची

———

स्थिति, सीमा और विस्तार

नोआखाली का ज़िला पूर्वी बंगाल में दक्षिणी-पूर्वी कोने पर स्थित है। यह २२°१६ और २३°१७ उत्तरी अक्षांशों और ६०°३६ और ६१°३५ पूर्वी देशान्तरों के बीच में फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल १६४४ वर्गमील और जन संख्या प्रायः १२ लाख है। इस ज़िले का प्रधान नगर नोआखाली खाल नाम की धारा या उप नदी (नदी) पर स्थित है। इसी से इस ज़िले का यह नाम पड़ गया। नोआखाली ज़िले के उत्तर में टिपरा ज़िला और हिल टिपरा का देशी राज्य है इसके पूर्व में हिल टिपरा का राज्य और चटगांव का ज़िला है। दोनों के बीच में विशाल फेनी नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है। इस ज़िले के दक्षिण में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में मेघना नदी की प्रधान धारा है। मेघना नदी में लगातार परिवर्तन होते रहते हैं। इसलिये ज़िले की पश्चिमी सीमा भी मेघना नदी की प्रधान धारा के साथ कुछ इधर उधर होती रहती है।

नोआखाली ज़िले की अधिक से अधिक लम्बाई ५५ मील है। यह लम्बी रेखा मेघना तट के जाहा चार

स्थान से उस स्थान तक चली गई है जहां विशाल फेनी नदी प्रथम बार जिले में प्रवेश करती है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी चौड़ाई २२ मील है। जिले का आकार एक सींग (शृंग) के समान है, जिले का उत्तरी भाग कुछ ऊंचा और विषम (लहरदार) है। यहां कई छोटी छोटी नदियां पहाड़ियों से आकर फेनी नदी में बहती हैं। इसके पश्चिम में यह जिला धान का एक विशाल मैदान है। इस मैदान में थोड़ी थोड़ी दूर पर असंख्य छोटे छोटे गांव हैं। गांव नारियल, सुपारी के बगीचों, मदार वृक्षों और दूसरी झाड़ियों से घिरे हुये हैं। झाड़ियां इतनी घनी हैं कि प्रत्येक गांव एक जंगल का टुकड़ा दिखाई देता है। इस सघन हरियाली के बीच में प्रायः प्रत्येक गांव में ईंटों की बनी हुई मस्जिदों की अधिकता है। इन पर सफेद अस्तर रहता है। ज़िले में प्रायः सब कहीं छोटे बड़े तालाब मिलते हैं। जिले के प्रधान स्थल के दक्षिण में असंख्य द्वीप हैं। इनमें सन्द्वीप सब से अधिक प्रसिद्ध है। इसी से मिले हुये बद् और पश्चिम में सिद्ध, द्वीप है। उत्तर-पश्चिम में दक्षिण-पूर्व तक इनकी लम्बाई २० मील और औसत

चौड़ाई १० मील है। हातिया द्वीप २५ मील लम्बा और ८ मील चौड़ा है। हातिया द्वीप और प्रधान स्थल के बीच में असंख्य चार (नदी के सूखे पेटे) हैं। इनकी स्थिति और सीमा लगातार बदलती रहती है। चार नई कछारी मिट्टी के बनें होते हैं। कुछ चार (पेटे) पुराने हैं और ज़िले के प्रधान स्थल के समान दिखाई देते हैं। यह चार भी बस गये हैं। इन में छोटे छोटे गांव बन गये हैं। प्रत्येक घर मँदार, सुपारी, नारियल और ताड़ के पेड़ों से घिरा हुआ होता है। गांवों के बीच में धान के खेत फैले हुये हैं। जो चार (पेटे) नये हैं उनमें पेड़ों का अभाव है। उनमें धान की खेती होती है। कहीं कहीं नई मिट्टी इतनी गीली और दलदली है कि उसमें खेती नहीं हो सकती है। इन नये चारों में असंख्य खाल या उपनदी की नवीन धारायें मिलती हैं। नदी के किनारे की भूमि पानी के तल से कुछ ही इंच ऊपर उठी होती है। यहां खेती नहीं हो सकती। यहां घास होती है जहां भैंस चरा करती हैं। चार का सब से अधिक नया भाग नदी के किनारे पर ज्वार भाटा के पानी के उतरने पर इतना गीला निकलता है कि उसमें घास भी नहीं होती है। यहां कुछ लोग मछलियों का शिकार किया करते हैं। चार (पेटे) में लगातार परिवर्तन

होता रहता है। कहीं नदी पुराने किनारे को काटती है। कहीं क्रमशः ढाल वाले किनारों के पास नई भूमि निकलती रहती है। इस ज़िले के प्रसिद्ध चार कई हैं।

ज़िले के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में मेघना नदी बहती है। पूर्व की ओर फेनी तहसील में छोटी और बड़ी फेनी नदियां हैं। इन दोनों के बीच में कोई बड़ी नदी नहीं है। इस भाग का पानी धाराओं के साथ बह जाता है जिन्हें समुद्री ज्वार भाटा ने बनाया है। ज्वार भाटा से बनी हुई इन धाराओं को खाल (उप नदी) कहते हैं। इन्हीं खालों में होकर जिले का बहुत सा वर्षा जल समुद्र तक पहुँचता है। इनमें नोआखाली खाल, महेन्द्र खाल और भवानीगंज खाल अधिक प्रसिद्ध हैं।

मेघना इस जिले की सब से बड़ी नदी है। प्राचीन समय में मेघना आर्यों के पर्यटन की चरम सीमा बनाती थी। कहते हैं जब पांडव लोग विचरते हुये मेघना तट पर पहुँचे तो उन्हों ने अपने सब से अधिक साहसी भाई भीम को मेघना के दूसरे किनारे पर जाने और नये देश का पता लगाने के लिये कहा। देश की खोज से लौटने पर भीम ने अपने बड़े भाई युधिष्ठिर से इतनी अशिष्ट

भाषा में बात की कि युधिष्ठिर इस नई भूमि की ओर पीठ कर ली। जिसने भीम जैसे शिष्टाचारी मनुष्य को असभ्य बना दिया और आर्यों की सभ्यता से नीचे गिरा दिया। इसके बाद कट्टर हिन्दू मेघना से पूर्व वाले देश को पांडव बर्जित देश कहने लगे। उनकी दृष्टि में यह भाग बड़ा असभ्य था। आरम्भ में मेघना सुरमा घाटी की नदियों की एस्चुअरी या खुला हुआ मुहाना थी। उस समय ब्रह्मपुत्र नदी बहुत अधिक पश्चिम की ओर बहती थी। फिर यहां प्रकृति ने बड़ी उथल पुथल मचा दी। इसी प्राकृतिक गड़बड़ी के समय मधुपुर वन की उत्पत्ति हुई। इसी समय ब्रह्मपुत्र नदी पूर्व की ओर मुड़ी और मेघना से मिलने लगी। इसके बाद नदियों का मल्ल युद्ध आरम्भ हुआ। ब्रह्मपुत्र फिर पश्चिम की ओर हटने लगी और अपने पुराने मार्ग के समीप आ गई। गत शताब्दी में यह नव-युद्ध समाप्त हो गया। गोआलंदो के पास ब्रह्मपुत्र गंगा से मिलने लगी। फिर यहां से आगे चल कर इनकी संयुक्त धारायें चांदपुर के पास मेघना में गिरने लगीं। आजकल मेघना नदी गंगा और ब्रह्मपुत्र का अधिकांश जल तो समुद्र में गिराती ही है। सिलहट की नदियों

का पानी भी इसमें आता है। मेघना पहले पहल नोआ-खाली ज़िले के उस स्थान को छूती है जो चांदपुर से कुछ नीचे अबाबील चार के एक कोने में स्थित है। यहां मेघना नदी लगभग ४ मील चौड़ी है। कुछ मील नीचे की ओर बढ़ने पर लखीपुर के ठीक सामने दूसरी ओर डाकातिया नदी मेघना में मिलती है। कुछ दूर आगे २२° ४८′ अक्षांश पर लारेंस चार नदी को दो भागों में बांट देता है। दाहिनी धारा शहबाज़पुर नदी कहलाती है। यह बाकरगंज ज़िले में बहती है। दूसरी (बाईं) धारा नोआखाली ज़िले के प्रधान स्थल और शिवनाथ, बिहारी बांस, सीता और सिकन्दर चरों के बीच में घिरी हुई बहती है। प्रधान स्थल मेघना की इस धारा के बाईं ओर है। चार दाहिनी ओर है। दक्षिणी सिरे पर पहुँचने के पहले ही चर जबर का नया द्वीप इस नदी को फिर दो धाराओं में बांट देता है। दाहिनी या दक्षिणी धारा हातिया कहलाती है। हातिया धारा हातिया द्वीप और सन्द्वीप के बीच में बहती हुई समुद्र में गिरती है। बाईं या उत्तरी (शाखा) धारा बामिनी कहलाती है। यह सन्द्वीप और प्रधान स्थल से घिरी हुई फेनी नदी के मुहाने तक

बहती है । इसके आगे यह दक्षिण की ओर मुड़कर चिटगांव तट के किनारे किनारे सन्द्वीप प्रणाली में होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है । हातिया के उत्तरी और दक्षिणी द्वीपों के बीच में कालेया की चौड़ी धारा है । यह हातिया धारा को शहबाज़पुर नदी से मिलाती है । चार अब्राबिल से फेनी नदी का मुहाना ६४ मील दूर है । हातिया नदी प्रायः ३२ मील लम्बी है । नदी की चौड़ाई प्रति वर्ष घटती बढ़ती रहती है । पर ऊपरी भाग में नदी की चौड़ाई में अधिक अंतर नहीं पड़ता है । यहां यदि एक किनारे की ओर पानी आगे बढ़ता है तो दूसरे किनारे से पीछे हट आता है । पर नदी के निचले मार्ग में कहीं नये द्वीप तेज़ी से प्रगट हो जाते हैं । पुराने द्वीप लुप्त हो जाते हैं । इससे नदी की चौड़ाई भी तेज़ी से घटती बढ़ती रहती है । इस समय हातिया और प्रधान स्थल के बीच में प्रायः २० मील की दूरी है । इनके बीच में चार जबार द्वीप हैं । बामिनी नदी १० मील से अधिक चौड़ी है । हातिया और सन्द्वीप एक दूसरे से ठीक २० मील दूर हैं । सब ऋतुओं में अधिक जल होने और अधिक चौड़ी होने पर भी मेघना नदी नावों के चलने के लिये अधिक उपयोगी नहीं है । फर्वरी से

नवम्बर मास तक यहां भयानक तूफ़ान आते रहते हैं। नवम्बर से फर्वरी तक तूफ़ान तो शान्त हो जाते हैं पर यहीं १८ फुट ऊँचा ज्वार भाटा आता है। तळी के रेतीले टोले भी स्थान बद्लते रहते हैं। इससे यहां नावों को सदा भय रहता है। उत्तरी और दक्षिणी हातिया के बीच में कालेया धारा बड़ी भयानक है। यहां दोनों ओर से ज्वार आता है और समुद्र को विशेष रूप से भयानक बना देता है। बंगाल की खाड़ी के पश्चिमी तट पर ज्वार केवल बारह तेरह फुट ऊँचा उठता है पर पूर्व की ओर यह अधिक ऊँचा होता जाता है। अधिक पूर्वी तट पर चालीस पचास फुट ऊँचा ज्वार आता है। नोआखाली इन दोनों के बीच में स्थित है। यहां भी हातिया के पास केवल १४ फुट ऊँचा ज्वार आता है। पर फेनी नदी के मुहाने पर इससे कई फुट अधिक ऊँचा ज्वार आता है। साधारण ज्वार पूर्वी धारा की ओर से सन्द्वीप और वामिनी नदियों के मार्ग से आता है। यह चिटगांव ज्वार कहलाता है। ज्वार की दूसरी लहर दौला कहलाती है। यह सन्द्वीप और हातिया द्वीपों के दक्षिण से आती है। बाकरगंज से यह उत्तर की ओर

मुड़ जाती है। यह हातिया और शहबाजपुर धाराओं में होकर जाती है और प्रधान स्थल के दक्षिणी पश्चिमी कोने पर चिटगांव के ज्वार से मिल जाती है। सन्द्वीप और हातिया के बीच में बहने वाले सभी खालों या जल मार्गों में ज्वार दोनों ओर से आता है पर पूर्व की ओर से आने वाला ज्वार अधिक प्रबल होता है। प्रति अमावस्या और पूर्णिमा को जो ज्वार की लहर उठती है वह कई दिन तक आती रहती है। बसन्त ऋतु में और शिशिर में जब दिन रात प्रायः समान होते हैं तब यह लहर और अधिक वेगवती होती है और लगातार कई दिन तक आती रहती है। फेनी नदी के मुहाने पर यह लहर सब से अधिक ऊँची होती है। हातिया और प्रधान स्थल के बीच की धारा में भी यह ऊंची होती है। यहीं से ज्वार मिलते हैं। ज्वार की यह ऊंची लहर भवानी गंज तक जाती है। जब दक्षिणी आंधी चलती है। तब से अधिक भयानक ज्वार की जलोर्मिर (लहर) उठती है। यह लहर पानी की दीवार के समान २० फुट ऊंची उठती हुई दिखाई देती है और १५ मील प्रति घंटा की चाल से चलती है। कहीं कहीं इसकी ऊंचाई इससे भी कहीं अधिक हो जाती है। जब यह लहर दौड़ती है

तब इसका घोर नाद मीलों तक सुनाई देता है। इसके आने पर नावों का चलना अत्यन्त कठिन हो जाता है। इस में पड़कर नावें प्रायः डूब जाती हैं। नोआखाली खाल के मुहाने पर डूबे हुये टीले हैं इसलिये भाटा या नावों को पानी के उतार के समय हातिया द्वीप प्रधान स्थल के बीच वाली धारा में लंगर डाल कर ठहरना पड़ता है। जब कभी किनारे तक पहुँचने योग्य गहरा पानी न हुआ और ठीक उसी समय विशाल जलोर्मि इन पर आकर इन्हें ढकेलने लगी तब यह नावें किनारे के टीलों से टकरा कर उलट जाती हैं। मई और अक्तूबर मास में जब दक्षिणी-पूर्वी तूफ़ानी हवायें चलती हैं तब यह विशाल लहरें मीलों तक स्थल के भीतर पहुंचती हैं और मेघना के मुहाने के छोटे द्वीपों को बाढ़ के पानी से डुबा देती हैं। १८६७ ई० के नवम्बर मास के चक्रवात में समूचा हातिया द्वीप डूब गया था। इस बार लहर की उंचाई ४० फुट से अधिक ही थी। १८७६ चक्रवात में सन्द्वीप पर १२ फुट गहरा पानी इकट्ठा हो गया। मेघना नदी किसी भी ऋतु में पांज नहीं होती है। पर छोटी नदियों और

उप नदियों की तली उस समय दिखाई देने लगती है जब ज्वार भाटा की लहर समुद्र की ओर लौटती है।

डाकातिया नदी पहली सहायक नदी है जो मेघना नदी में नोआखाली जिलों में प्रवेश होने पर मिलती है। यह नदी पहाड़ियों से निकलती है और पूर्व की ओर बहती है। टिपरा जिले को पार करके यह कई शाखाओं में बटकर मेघना नदी में मिलती है। दक्षिणी शाखा के किनारे नोआखाली जिले का रायपुर स्थान बसा है। पहले डाकातिया व्यापार के लिये बहुत प्रसिद्ध थी। यहां होकर व्यापार का माल उत्तर और पश्चिम की ओर जाता था। इस समय यद्यपि इसका अधिकांश जल चांदपुर धारा में होकर समुद्र में गिरता है फिर भी रायपुर धारा इस समय भी देशी नावों के चलने योग्य गहरी बनी रहती है। इसी से रायपुर नगर से नारियल पान, केला और सन्तरे बाहर भेजे जाते हैं। नोआखाली जिले में इस नदी की लम्बाई १५ मील है।

भवानी गंज खाल—दूसरी मुख्य सहायक नदी भवानी गंज खाल है। यह लखीमपुर थाना के उत्तर से निकलती है और लखीमपुर से होती हुई, भवानीगंज से

होकर बहती है। इसमें पूरे वर्ष भर नावें चल सकती हैं। लखीमपुर से बारह मील आगे तक बड़ी बड़ी नावें भी आ सकती हैं। गर्मी के दिनों में केवल बाढ़ के समय में इसमें नावें चलाई जा सकती हैं।

महेन्द्र खाल—यह नदी टिपरा ज़िले से निकल कर नौदोन के दक्षिण से होती हुई मेघना की ओर बहती है। हाटिया के उत्तरी भाग में यह ज़िले की मुख्य नदी प्रतीत होती है।

नोआखाली खाल—यह नदी बेगमगंज के निकट जिले के बीच से निकल कर नोआखाली नगर से होकर बहती है। लगभग २० मील तक इसमें नावें चलाई जा सकती हैं। लेकिन केवल जाड़े के दिनों में नावें चलाने में सुगमता होती है क्योंकि उस समय नदी की धारा बाढ़ के कारण तेज़ रहती है।

फेनी नदी—फेनी नदी टिपरा की पहाड़ियों से निकलती है। इसे दाकातिया नदी भी कहते हैं। कोमिला के मैदानों से होती हुई यह सिकंदरपुर के निकट नोआ-खाली ज़िले में प्रवेश करती है। जाड़े के दिनों में सम्पूर्ण नदी में नावें चलाई जा सकती हैं। लेकिन

कहीं कहीं पानी के छिछले पन और बलुई किनारों के कारण बाधा अवश्य पड़ती है। फेनी नदी जिले के उत्तरी भाग की पहाड़ियों से निकल कर चिटगांव जिले की सीमा बनाती है। सीमा की आधी दूरी पर इसमें मुहुरी नदी आकर मिलती है। मुहुरी नदी टिपरा की पहाड़ियों से निकलती है। छागलनया थाना के उत्तरी-पूर्वी कोने पर यह इस जिले में प्रवेश करती है। इसमें २१ मील तक नावें चलाई जा सकती है। यह छागलनया और फेनी थानाओं की सीमा बनाती है। इन पूर्वी नदियों में पहाड़ियों से निकलने वाले अनेक जल स्रोत पानी लाते हैं। वर्षा के दिनों में इनमें भयंकर बाढ़ आती है और ये अपने किनारे तोड़-फोड़ डालती हैं।

इन नदियों के अतिरिक्त यहां अनेकों नाले हैं। ये नाले काफी बड़े हैं और बरसात के दिनों में इनमें इतना पानी आ जाता है कि छोटी छोटी नावें चलाई जा सकती हैं, फिर भी इन्हें नदी नहीं कहा जा सकता। बरसात के दिनों में ये सामान लाने और ले जाने के काम में आते हैं।

भूमि की बनावट—इस भूमि को बने अभी अधिक दिन नहीं हुए हैं। इस समय भी जल और थल की सीमाएँ निश्चित रूप से निर्धारित नहीं की जा सकतीं। इसके इतिहास की खोज बीन करना बहुत कठिन है। लेकिन यह अवश्य कहा जा सकता है कि हाटिया और बामनी द्वीप मिल कर एक हो गए अन्यथा इनके बीच कोई एक पतली नहर रह गई थी।

रेवेल के नक़शे को देखने से मालूम पड़ता है कि मेघना लखीमपुर से होकर बहती थी। इसके बाद ही यह स्थान है जहां ईस्टइंडिया कम्पनी की एक मुख्य फैक्टरी बनी हुई थी। रेवेल ने अपने नक़शे में १७३० मील का तट भी दिखाया है। यह लाइन वर्तमान नोआ-खाली नगर से होकर गुजरती है। रेवेल ने अपने नक़शे में मेघना का उत्तरी भाग नहीं दिखाया है। हाटिया को एक अविभाजित भूमि के टुकड़े के रूप में दिखाया गया है। यह भूमि उत्तर से दक्षिण १५ मील और पूर्व से पश्चिम १० मील दिखाई गई है।

पहले बामनी टापू से होकर एक नदी बहती थी, लेकिन धीरे धीरे वह नीचे की ओर हटती गई

और उसके पाट की भूमि सूख कर टापू का भाग बन गया।

सन् १८१८ में मि० वाल्टर ने बामनी के बारे में लिखते हुए बताया है कि इसके बीच से होकर एक नहर बहती थी। इसका नाम शघुआ दूना था। सनद्वीप इस समय तक एक पृथक द्वीप था। यह चटगांव से १२ मील की दूरी पर था। बामी से इसकी दूरी ८ मील की थी। उत्तर से दक्षिण इसकी लम्बाई १४ मील और पूर्व से पश्चिम इसकी चौड़ाई १२ मील है। इस समय तक बदू और सिंधी में लोगों ने रहना आरम्भ नहीं किया था। हाटा मुख्य द्वीप से ५ या ७ मील की दूरी पर २० मील लम्बा और १६ मील चौड़ा एक द्वीप था। सनद्वीप से इसकी दूरी १६ मील की थी। उत्तर की ओर पानी इसके तट को धीरे धीरे काट रहा था।

सर जोसेफ हूकर सन् १८५० में इस ओर गए थे। उन्होंने देखा कि मेघना नदी धीरे धीरे पश्चिम की ओर खिसकती जा रही है। इससे नोआखाली की ओर सूखी भूमि घटती जाती है और इसके फल स्वरूप दूसरी ओर एक द्वीप बनता जाता है। नोआखाली की भूमि समुद्र

की ओर बढ़ती जाती थी और २३ वर्षों में वह ४ मील बढ़ गई थी।

सिधी इस समय भी स्थिति था क्योंकि हूकर इसी द्वीप पर उतरे थे। सिधी और हाटिया के बीच की नहर पार करके वे हाटिया पहुँचे थे। हूकर ने लिखा है कि यहाँ की भूमि समतल थी और समुद्र की सतह से उसकी उँचाई केवल ४ फुट थी। नहर का पानी बरसात में १४ फुट तक ऊपर उठ जाता था और बाद में पुनः अपनी पुरानी स्थिति में लौट जाता था।

रेवन्यू सर्वे के समय दकातिया नदी के मुहाने पर बड़े बड़े 'चार' बन गए थे और लखीमपुर रेनेल के नक्शे में दिखाए हुये स्थान से तीन मील की दूरी पर था। लखीमपुर से नीचे के तट में सन् १८२० से अब तक बहुत परिवर्तन हो चुका है। किस स्थान पर पहले गूटा स्थिति था, वह पानी में बिल्कुल डूब चुका है। हाटिया और शाबाजपुर के बीच बहुत से 'चार' बन गए थे। मेघना नदी के चार लगातार दक्षिण की ओर खिसकते रहे हैं, इससे नदी में नाव चलाने में हमेशा कठिनाइयाँ उपस्थित होती रही हैं। हटिया का उत्तरी

भाग जल कटता जा रहा है, लेकिन इस द्वीप का उसी गति से दक्षिण की ओर विस्तार हो रहा है। हाटिया के उत्तर की नहर बिल्कुल हट हो चुकी थी लेकिन अब वह पुनः अपने पुराने स्थान से होकर बहने लगी है। सिधी का पश्चिमी भाग जलमग्न हो चुका है लेकिन पूरब में सनद्वीप की ओर उसका विस्तार हुआ है।

मुख्य द्वीप पर दृष्टिपात करने से पता लगता है कि फेनी नदी का मुहाना बिलकुल समाप्त हो चुका है। वहाँ पर अब भूमि है और फेनी नदी कम्पनी गंज से दो मील की दूरी पर बामनी नहर में गिरती है। दक्षिणी तट पर नदी बराबर हटती रही है और अब वह नोआ-खाली से केवल ३ मील की दूरी पर बहती है। इन परिवर्तनों में जाबर 'चार' का मुख्य स्थान है। वह मेघना नदी को दो तीव्र धाराओं में विभाजित करता है। इसकी एक धारा मुख्य द्वीप से टकराती है और दूसरी हाटिया के उत्तरी सिरे को छूती हुई बहती है। मुख्य द्वीप से टकराने वाली तीव्र धारा से नोआखाली स्टेशन को सदैव डर बना रहता है।

पहाड़ियाँ—नोआखाली ज़िले में पहाड़ियाँ बिल्कुल नहीं हैं। सुदूर पूर्व में टिपरा की पहाड़ियाँ अवश्य कुछ दूर तक चली आती हैं।

खाइयाँ—इस ज़िले की उत्तरी और केन्द्रीय भूमि मेघना नदी के किनारों से नीची है। कहा जाता है कि इसका कारण १७६२ का भूकम्प है जिससे १५ मील की खाँई बन गई थी। इस भूकम्प के फलस्वरूप बहुत सी भूमि जलमग्न हो गई थी और बहुत सी भूमि पर से जल हट गया था और वह सूख कर भूमि का भाग बन गई है। यह भूकम्प बहुत भयंकर था और उसने चटगांव को भी तितर वितर कर दिया था। ढाका में भी इस भूकम्प का इतना भयंकर प्रभाव पड़ा था कि नदी की लहरें बहुत सी बस्तियों को बहा ले गईं।

सन् १८७५ में ज़िला के कलक्टर ने ७७ खाँइयों की सूची तैयार की थी। यह कुल ८ वर्ग मीलों में थी। इनमें बहुतों का पानी निकाल दिया गया है और उनको खेती के काम में लाया जाता है। धीरे धीरे इनका धरातल भी ऊँचा होता जा रहा है।

तालाब—तालाब इस ज़िले की मुख्य वस्तुएं हैं।

प्रत्येक गाँव में छोटे-बड़े अनेक तालाब देखने को मिलेंगे। घरों के बनाने के लिए भूमि की सतह को पानी की सतह से ऊँचा करना पड़ता है। इसके लिए लोग किसी स्थान की भूमि खोद कर मिट्टी एकत्रित करते हैं और स्थान पर गड्ढा हो जाने के कारण तालाब बन जाता है। बहुत बड़ी संख्या में छोटे छोटे तालाबों के होने का यही कारण है। बहुत से तालाब राजाओं और बड़े बड़े जमींदारों ने अपने नाम के लिए भी बनवाये थे। सन् १९०४-०५ में इस जिले में कुल १७,९८५ तालाब थे। इनमें से १२,६७१ तालाबों में वर्ष भर पानी रहता है।

बहुत से तालाबों के किनारों पर ऊँचे बांध बना दिए गए हैं। इन किनारों पर खजूर आदि के बहुत से ऊँचे ऊँचे पेड़ उग आए हैं। इससे इन तालाबों का दृष्य बहुत ही सुन्दर और आकर्षक बन जाता है। यहाँ पर कुएँ नहीं हैं इसलिए लोग इन्हीं तालाबों का पानी पीते हैं।

मछलियाँ—यहाँ तालाबों और नदियों में विभिन्न प्रकार की मछलियां बहुत बड़ी संख्या में पाई जाती हैं। लोग इन मछलियों को बाहर भी भेजते हैं। यह यहाँ की एक मुख्य चीज़ मानी जाती है।

जलवायु, तापक्रम और वर्षा

जलवायु और तापक्रम—यहाँ की जलवायु प्रायः वर्ष भर एक समान रहती है। इसका कारण यहाँ की अधिक वर्षा भी है।

साधारणतः यहाँ का वर्ष भर का औसत तापक्रम ७७ अंश फा० रहता है। वर्ष भर का अधिक से अधिक तापक्रम ८४° फा० होता है और कम से कम ६६° फा० है।

जनवरी यहां का सब से अधिक ठंडा महीना होता है। इस महीने में २४ घंटे का औसत तापक्रम ६५° फा० रहता है। इन ठंड के महीनों में यहां का अधिक से अधिक तापक्रम ७७° फ० रहता है और कम से कम ५३° फ०। फरवरी में तापक्रम ३° से बढ़ जाता है और मार्च में यह बृद्धि ६० हो जाती है।

अप्रैल से यहां गर्मी की ऋतु आरम्भ होती है। यदि अपने यहाँ की गर्मी की दृष्टि से देखा जाय तो मैं कहूँगा कि वहाँ गर्मी पड़ती ही नहीं। गर्मियों में यहाँ २४ घन्टे का औसत तापक्रम ८२° रहता है। इन दिनों अधिक से अधिक तापक्रम ८६० हो जाता है और रात को

तापक्रम गिर कर कम से कम ७४° हो जाता है। यहाँ मई का महीना सब से अधिक गर्म महीना माना जाता है। दिन का तापक्रम तो अप्रैल माह के बराबर ही होता है लेकिन इस महीने में अप्रैल की अपेक्षाकृत रातें अधिक गर्म होती हैं। अगले तीन-चार महीनों में भी दिन का तापक्रम करीब करीब इतना ही रहता है, किन्तु जुलाई और अगस्त में रात का तापक्रम गिरकर ८०५° हो जाता है। सितम्बर और अक्तूबर में रात का तापक्रम पुनः अधिक रहने लगता है। इसके बाद के महीनों की रातें ठंडी रहती हैं। नवम्बर के महीने में अधिक से अधिक तापक्रम ८३ अंश और कम से कम ताप-क्रम ६४° हो जाता है। दिसम्बर के महीने में २४ घन्टे का औसत तापक्रम ६७° रहता है और इस महीने में कम से कम तापक्रम गिर कर ५५° हो जाता है।

ऊपर लिखे का सारांश यह हुआ कि मध्य नवम्बर से यहाँ शीत ऋतु प्रारम्भ होती है और फरवरी के अन्त तक रहती है। यह बहुत सुहावना मौसम होता है, न तो अधिक ठंड होती है और न अधिक गर्मी। आकाश स्वच्छ होता है और हलकी हल्की ठन्डी हवा बहती है। मार्च और अप्रैल गर्मी के महीने अवश्य हैं

लेकिन इन दिनों का मौसम भी खराब नहीं होता। हम उसे भी सुहावना मौसम कह सकते हैं। मई और उसके बाद के पाँच महीनों में गर्मी रहती है और इसके अतिरिक्त हवा नम होती है।

वर्षा—यहाँ वर्षा बहुत होती है। वर्ष भर में औसत वर्षा ११२.२२ इन्च होती है। किन्तु इसमें वर्ष प्रति वर्ष अन्तर भी पड़ता जाता है। सन् १६०२-०३ में १५४॥ इन्च से भी अधिक वर्षा हुई। कभी कभी अप्रैल का महीना बहुत नम हो जाता है और इस वर्ष १५ इन्च तक पानी बरस जाता है। साधारणतः जून से वर्षा आरम्भ होती है और इस महीने में २२ इञ्च वर्षा हो जाती है। अगले दो महीनों में २४ इञ्च वर्षा होती है और प्रत्येक तीन दिनों में दो दिन अवश्य लगातार वर्षा होती है। पिछले २०, २५ वर्षों में केवल एक वर्ष ऐसा गुजरा है जब यहाँ जून के महीने में केवल १४ इञ्च वर्षा हुई।

नवम्बर के महीने से वर्षा बन्द हो जाती है और इस महीने में पानी की दो-चार झड़ियाँ लग जाती हैं। इस प्रकार एक या डेढ़ इञ्च पानी बरस जाता है।

दिसम्बर और जनवरी के महीने में वर्षा नहीं होती। इन महीनों में एक इञ्च वर्षा भी नहीं हो पाती। फरवरी में एक इन्च तक पानी बरस जाता है। मार्च में खूब आँधियाँ चलती हैं और लगभग ३ इञ्च वर्षा हो जाती है।

इतिहास

प्रारम्भिक इतिहास—गंगा नदी के डेल्टा के जिलों में नोआखाली नवीनतम है, इसलिए इसका कोई पुराना इतिहास भी नहीं है। लगभग ३००० वर्ष पूर्व यह मनुष्य के रहने योग्य बन सका था और डेढ़ हजार वर्ष पूर्व यहाँ आर्य जाति के लोग आये। इसका कोई पता नहीं है कि क्या आर्यों के पूर्व भी यहाँ के जंगलों में कोई जंगली जाति रहती थी। यहां आकर बसे हुये आदि काल के आर्यों के बारे में भी कुछ भी ज्ञात नहीं है। सम्भवतः यहाँ सब से पहले बंगाल के उत्तर-पूर्व से एक चांडाल जाति के लोग आकर बसे थे। जो कोई भी लोग रहे हों, न तो वे कोई संस्कृति न कोई भग्नावशेष छोड़ गये है। जिससे इनके बारे में पता लगे।

आदि काल की पुस्तकों और इतिहास में भी इनका उल्लेख नहीं मिलता है।

रामायण में एक स्थान पर सीता के खोज करने के लिए पूर्व में भेजी गई सेना को जावा तक का मार्ग बताया गया है। मार्ग में मिलने वाली जंगली जातियों का भी थोड़ा सा उल्लेख है लेकिन उसमें किसी स्थान अथवा जाति विशेष का उल्लेख नहीं है। इसलिए उस सम्बन्ध (नोआ खाली) का पता वहां की आदि-जातियों से भी लगाया जा सकता है। कालीदास ने रघु-वंश में इस स्थान का उल्लेख करते हुए लिखा है कि यह स्थान समुद्र तट पर हरे भरे और खजूर के जंगलों से ढका हुआ है। महाभारत में भी इसी प्रकार का थोड़ा सा उल्लेख मिलता है।

हिन्दू-काल—दंत कथाओं के अनुसार हिन्दू यहां १५वीं शताब्दी में आए। कहा जाता है कि मिथिला के राजा के नौवें पुत्र, राजा अदीसूर चन्द्रनाथ तीर्थ यात्रा से लौटते समय नोआखाली से होकर गुजरे। यहां बाराही देवी ने स्वप्न दिया कि यदि वे उनकी आराधना करेंगे तो वे उनको इस स्थान का राजा बना

देंगी। उन्होंने देवी की आज्ञानुसार बाराही देवी का मन्दिर बनवाया। बलि देते समय उन्होंने दिशा समझने में भूल की और बकरे का सिर पश्चिम की ओर कर दिया। प्रातःकाल सूर्य की रोशनी में उन्होंने अपना भ्रम पहिचाना और 'भूल हुआ', 'भूल हुआ' चिल्ला पड़े। इसी से इस स्थान का नाम भूलुआ पड़ गया। कहा जाता है कि यह घटना सन् १२०३ ई० का है। इस समय बख्तियार खिलजी और लोगों से यह कहने में संलग्न था और हो सकता है उस समय कुछ हिन्दू भाग कर यहां आ गए हों।

कहा जाता है कि अदीसूर राजपूत थे, लेकिन यह अवश्य हुआ है कि उनके पुत्र विश्वम्भर ने कायस्थ जाति में विवाह किया था। आजकल भी सूर्य लोग कायस्थ हैं। कहा जाता है कि विश्वम्भर के काल की प्रथम राजधानी कल्याणपुर थी। विश्वम्भर के चौथे उत्तराधिकारी ने श्रीरामपुर बसाया था। वहां उन्होंने एक महल भी बनवाया था जिसके खंडहर अभी भी मौजूद हैं।

टिपरह—टिपरह एक जंगली जाति है जो १५०० वर्ष पूर्व ब्रह्मपुत्र की एक घाटी से आकर यहां बस गए

थे। ये सिलहट के मैदानों और टिपरा पहाड़ियों पर बसे थे। धीरे धीरे ये शक्तिशाली हो गए थे और १३वीं शताब्दी के अन्त तक इन्होंने मेघना से मनीपुर तक अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। ये लगातार अराकान के राजाओं और बंगाल के मुसलमान गवर्नरों से युद्ध करते रहे हैं।

विश्वम्भर का आठवां उत्तराधिकारी लक्ष्मण मानिक्य भूलुआ का सब से प्रसिद्ध राज्य हुआ है। उसने बहुत से विद्वानों और ब्राह्मणों को लाकर यहां बसाया और उसने स्वयं भी संस्कृत में दो पुस्तकें लिखी हैं। बाद में यह राज टिपरहों के हाथ में पड़ गया। विश्वम्भर के बाद के उत्तराधिकारी बलराम राय ने टिपेरहों का आधिपत्य मानने से अस्वीकार कर दिया। यह घटना १५६७ की है। इसके फलस्वरूप टिपरा के राजा अमर मानिक ने भूलुआ पर आक्रमण किया और बलराम पराजित होकर कर देने को वाध्य हुआ।

इसके बाद से बलराम के उत्तराधिकारियों के सम्बन्ध में अधिक पता नहीं लगता। सन् १६६१ में यहां कुछ डचों के जहाज आकर टकराए। भूलुआ के

राजा ने उनका सत्कार किया। इसके बाद सन् १७२८ में भुलावा परगना के जमींदार राजा कीर्ति नारायण का उल्लेख मिलता है।

मुसलमान-काल—यह कह सकना बहुत कठिन है कि नोआखाली में मुसलमान सब से पहले कब आए। सन् १२७६ में मुहम्मद तुगरल ने देवमानिक की सहायता गद्दी प्राप्त करने के लिये की। इसी समय से मुसलमान यहां आए।

सन् १३४७ में सोनारगांव के गवर्नर इलियासशाह उर्फ शमसुद्दीन ने इस राज्य पर आक्रमण किया और टिपरा के राजा प्रताप मानिक को युद्ध में हराया। वह यह राज्य स्थापित तो न कर सका लेकिन बहुत सा धन और हाथी लूट-मार कर साथ ले गया। उसने चटगांव को भी जीता और उसके पश्चात् वह कुछ दिनों तक मुसलमानों के आधीन रहा। सन् १३५० तक यह उनके हाथ में रहा। बाद में अराकानियों ने इसे जीत लिया। सन् १५१३ में टिपरा के राजा ने पुनः इसे अराकानियों से छीन कर अपने आधिपत्य में कर लिया।

मुसलमान राजा लगातार इस राज्य पर आक्रमण करते रहे। वे विशेषतः हाथी प्राप्त करने के लिए आक्र-

मण किया करते थे। इन आक्रमणों को रोकने के लिए १५वीं शताब्दी में राजा धर्म मानिक ने चटगांव पर आक्रमण किया और चटगांव को अपने आधिपत्य में कर लिया। १६वीं शताब्दी में चटगांव पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए टिपरा के राजा और मुसलमानों तथा अराकानियों के बीच युद्ध हुए। टिपरा वालों की विजय रही। बाद में बंगाल के गवर्नर हुसैन शाह ने टिपरा पर आक्रमण किया। दो आक्रमणों में वह असफल रहा। तीसरी बार उसने विजय पाई और कामरूप, करनटा और जाज नगर (टिपरा) उसके आधीन हो गए। वह अधिक दिनों तक आधिपत्य स्थापित न रख सके। टिपरा के राजा देव मानिक ने पुनः राज्य प्राप्त कर लिया। वे भी अधिक दिनों तक राज न कर सके और सुल्तान नासिरउद्दीन ने आकर यहां आधिपत्य जमा लिया। इसी समय से अफ़गान यहां आकर बसने और अपने राज्य का विस्तार करने लगे।

सन् १५८७ में अराकान के राजा ने इस राज्य पर विजय पाई। बाद में यह सनद्वीप के आधीन हो गया

था। अराकानी भी मुसलमानों को आने से रोकने के लिए सनद्वीप नरेश की सहायता करते थे।

बीच का इतिहास इस प्रकार के संग्रामों का रहा और शायस्ता खां के समय से नोआखाली पूर्णतः मुगलों के आधिपत्य में आ गया। टिपरा पर मुगलों का आधिपत्य १८वीं शताब्दी में स्थापित हुआ। लेकिन भूलुआ पर इससे बहुत पूर्व मुगलों का शासन हो गया था।

सन् १७२२ में मुगल साम्राज्य के विभिन्न भागों के पुनर्सङ्गठन के समय इस द्वीप के दोनों मुख्य प्रदेश और सरकार उदयपुर ढाका नियाबत (प्रान्त) के जहाँगीर नगर चकला में मिला दिए गए। सरकार उदयपुर टिपरा नरेश की एक पूर्वी रियासत थी।

अंग्रेजों का आगमन—सन् १७५६ ई० में ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने फेनी नदी के मुहाने पर जदिया में कपड़ा बुनने की कम्पनियां खोली थीं। लेकिन बंगाल प्रान्त तथा नोआखाली जिले से कम्पनी ने सन् १७६६ ई० से लगान वसूल करना आरम्भ किया था अर्थात् इसी समय से अंग्रजों का इस प्रदेश पर शासन-काल आरम्भ हुआ। पहले वे डिपुटी (छोटे) दीवानों द्वारा

नोआखाली से कर वसूल करते थे और शासन चलाते थे। सन् १७६० में पूरा नोआखाली टिपरा में मिला दिया गया।

सन् १८२० में नोआखाली स्थित नमक के एजेंट की स्थिति से उत्पन्न कुछ कष्टों और शिकायतों की जांच के लिए एक कमेटी बैठाई गई। इस कमेटी ने सिफारिश की कि नमक के एजेंट को कुछ शासनाधिकार भी दिए जांय। इसके फलस्वरूप बाद में धीरे धीरे आस पास के प्रदेश इसमें मिला दिए गए और १८६८ में इस सम्मिलित प्रदीप का नाम नोआखाली जिला रखा गया।

सन् १८६० में फिर परिवर्तन किए गए और नोआ-खाली के कुछ गांव टिपरा जिला में मिला दिए गए और टिपरा जिला के कुछ गांव नोआखाली को दे दिए गए।

सन् १८८१ में अन्तिम रूप से सीमाएँ निर्धारित की गईं। इस बार फेनी नदी को नोआखाली और चटगांव जिलों के बीच की सीमा माना गया। इस प्रबंध के फलस्वरूप चटगांव के चार गांव जिनकी भूमि लग-

भग ४ वर्ग मील थी नोआखाली जिले में मिला दिए गए।

सन् १८२९ में पहले पहल यहां कमिश्नर की नियुक्ति की गई थी। इसी समय से नोआखाली चटगाँव के कमिश्नर के अन्तर्गत है।

जनसंख्या, धर्म और जातियाँ

प्रथम बार यहां सन् १८७२ में जब जन गणना हुई थी। इस समय १,५७७ वर्ग मील के क्षेत्र में यहां ७१३,९३४ प्राणी रहते थे। यहां के निवासी जन गणना के विरुद्ध थे और एक स्थान पर तो कुछ गांवों के लोग लाठी लेकर एकत्रित हो गए थे। इन्होंने जन गणना वाले सुपरवाइजर को मारा-पीटा और उसे तालाब में फेंक दिया। पुलिस के सहायक सुपरिन्टेन्डेंट उसकी सहायता के लिए उस स्थान पर पहुँचे लेकिन लोगों ने उन्हें भी अच्छी तरह मारा पीटा व बुरी तरह घायल हुए।

इस विरोध का कारण यह बताया जाता है कि लोग समझते थे कि जन गणना के पश्चात् उन पर अधिक कर लगाया जायगा। कुछ लोगों का कहना है

कि इस विरोध का कारण यह था कि जनरल साहब विशेष उम्र की लड़कियों और स्त्रियों को देखना चाहते थे और उन्हें इसके लिए कलकत्ता जाना पड़ेगा।

सन् १८८१ में दूसरी बार जन गणना हुई। इस समय जन संख्या २·१४ प्रतिशत कम हो गई थी। इसका कारण सन् १८७६ का भयंकर भूकम्प बताया जाता है। इस भूकम्प में ३६,००० से अधिक व्यक्ति जल-मग्न हो गए थे और ४६,००० व्यक्ति कालरा आदि भयंकर बीमारियों के शिकार हुए थे। सन् १८९३ में एक दूसरा भूकम्प आया था लेकिन कहा जाता है कि इससे अधिक क्षति नहीं हुई। इसके बाद बिजली गिरने से भी हजारों व्यक्तियों की जाने गई थीं। सन् १८९६ में यहाँ एक काल भी पड़ा था और उसमें भी बहुत सी मृत्युएँ हुई थीं। लेकिन प्रत्येक वर्ष मृत्यु से अधिक जन्म होता रहा। इसके फल स्वरूप जन संख्या कम नहीं होने पाई, बल्कि १९०१ में तो जन संख्या में बढ़ती ही थी। इससे यहाँ की जनसंख्या १,१४१ ७२८ थी अर्थात् १३·१ प्रतिशत की बढ़ती हुई थी।

इस जिले का क्षेत्रफल १,६४४ वर्ग मील है और

प्रत्येक वर्गमील में ६६४ व्यक्ति रहते हैं। सबसे अधिक घनी जन संख्या छगलनिया थाने की है। इसकी जन संख्या प्रति वर्ग मील १,०३३ है। इसके बाद रामगञ्ज का नम्बर आता है। इसकी जन संख्या प्रति वर्गमील १०२३ है। सुधराम और हातिया में प्रति वर्ग मील ५५७ और २६६ जन संख्या है।

म्यूनिस्पैल्टी—यहां केवल सुधराम में म्युनिस्पैल्टी है। इसकी जन संख्या सन् १८७२ से १६०१ के बीच अर्थात् ३० वर्ष में ४,६८१ से ६,५२० होगई है।

गाँव—सन् १६०१ की जन गणना के अनुसार यहाँ २३३३ गाँव हैं। घर की कुल संख्या २०६,१४७ है। इस प्रकार प्रति गाँव में ७६ घरों का औसत पड़ता है।

औरतें अधिक—सन् १६०१ की जन गणना से पता लगता है कि यहाँ की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या अधिक है। प्रति वर्ग मील में उनकी संख्या मर्दों की अपेक्षा ४ अधिक है।

धर्म—सन् १६०१ की जन गणना के अनुसार यहाँ २४·०४ प्रतिशत लोग हिन्दू थे और ७५·४६ प्रतिशत लोग मुसलमान। सन् १८७२ में मुसलमानों की

भी संख्या केवल ७४·६३ प्रतिशत थी और हिन्दुओं की संख्या २५·२५ प्रतिशत थी। इस प्रकार हिन्दुओं की संख्या में कमी और मुसलमानों की संख्या में बढ़ती हुई है।

ईसाई यहां नाम मात्र के हैं। उनकी कुल संख्या ३६२ थी। इसमें से १४ यूरोपियन थे और ४६० यूरेशियन।

ब्रह्म समाज—यहाँ ब्रह्म समाज की दो शाखाएं हैं। इन दोनों को मिला कर २० से कुछ अधिक सदस्य हैं।

देवी-देवताएँ—यहाँ के ब्राह्मण और ऊँची जाति के लोग अधिकतर शाक्त धर्म के अनुयायी या काली (दुर्गा) के उपासक हैं। वैष्णव चैतन्य की उपासना करते हैं। नीची जाति की औरतें शीतला देवी की भी पूजा करती हैं। नागपंचमी के दिन ये लोग नाग की पूजा करते हैं। कहीं कहीं नाग पूजा को मनसा देवी की पूजा भी कहते हैं। शनि और शकुन देवताओं की भी पूजा की जाती है। श्री पंचमी औरतों का एक बड़ा

त्योहार माना जाता है और इस समय सरस्वती देवी की पूजा की जाती है।

जातियाँ—यहाँ की हिन्दू सम्प्रदाय अनेकों जातियों में बँटा हुआ है और एक जाति के लोग दूसरे से सामाजिक सम्बन्ध नहीं रखते और अन्तर्जातीय विवाह ही होते हैं।

यहां की मुख्य जातियां ब्राह्मण, कायस्थ, शूद्र, बारूई, कुम्हार, सूत्रधार, नादित, सुनरी, तेली, जूगी कैबर्ता, नमसुद्रा और भूंमाली हैं।

ब्राह्मण—ब्राह्मण की संख्या पिछले ३० वर्षों में सब से अधिक रही है। सन् १८७२ में यहां केवल ७६२२ ब्राह्मण थे। सन् १८६१ में इनकी संख्या १२,००० हो गई थी और सन १६०१ में लगभग

कायस्थ—सन् १६०१ में यहाँ कायस्थों की संख्या ३४ हज़ार थी, लेकिन इससे दस वर्ष पूर्व इनकी संख्या ४५ हज़ार थी।

शूद्र—शूद्रों की संख्या सन् १८७२ में केवल चार हज़ार थी लेकिन अब उनकी संख्या १३ हज़ार हो गई है। इनके यहाँ के रिवाज के अनुसार दुल्हे के स्थान पर दुल्हिन के घर वालों को दहेज मिलता है।

बरुई—सन् १६०१ में इनकी संख्या ८००० थी। इससे दस वर्ष पूर्व इनकी संख्या केवल इसकी आधी थी।

सुनरी और तेली—यहाँ के सुनरी (सुनार) और तेली अपने को साह कहते हैं। ये लोग व्यापार करते हैं और इनकी आर्थिक दशा भी औरों की अपेक्षा अधिक अच्छी है। व्यापार अधिकतर इन्हीं लोगों के हाँथ में है। ये लोग छोटी छोटी दूकानें भी करते हैं।

जूगी—जूगी का अर्थ है जोगी और इनकी संख्या ४७,००० है। इस प्रकार ये भी यहाँ की एक मुख्य जाति हैं। ये लोग अधिकतर कपड़ा बुनने का काम करते हैं। ये लोग ब्राह्मणों को अपना पुरोहित नहीं मानते। इनके पुरोहित इन्हीं की जाति के लोग होते हैं। ये लोग अपने मुर्दों को जलाते नहीं बल्कि उसे दफन करते हैं। यह यहाँ की एक पढ़ी-लिखी जाति है और इसने उन्नति भी की है। पिछले दस बीस वर्षों में इनकी जन संख्या में २४ प्रतिशत की बढ़ती भी हुई है।

मुसलमान—सन् १६०१ में यहाँ ८६६,२४० मुसलमान थे। इनमें से ८६,०५८० अपने को शेख कहते थे। शेष

में से १००० पठान थे, १३०० सैयद थे, १००० निवासी (मछली बेचने वाले) थे, ६०० नागरचो (ढोल और बाजा बजाने वाले) थे, और १३०० दाइयां थीं। ये लोग सब की सब सुन्नी हैं। पठान और सैयद अपने को विदेशी कहते हैं, लेकिन यह बात बिलकुल सत्य नहीं है। इनमें अधिकतर सम्पदाय की नीचली जातियों के लोग और धर्म-परिवर्तित लोग हैं।

चलन और रिवाज़—यहाँ बच्चे के जन्म पर बहुत खुशी मनाई जाती है। मेहमान और मित्र आदि बच्चे को भेंट देते हैं। ऐसे अवसरों पर बड़ी बड़ी दावतें भी होती है। इसमें कभी कभी पाँच हज़ार लोग तक निमंत्रित किए जाते हैं। लेकिन नाच-गाना और संगीत का आयोजन बिलकुल नहीं होता है।

यहाँ की औरतों में एक बहुत मनोरंजक चलन है। जो औरतें पर्दे के रिवाज को कड़ाई से नहीं मानतीं वे अपने साथ बाहर एक छाता लेकर चलती हैं। यह छाता बुर्का का काम देता है।

कुछ हिन्दू जातियों में विवाह के सम्बन्ध में एक उल्टा रिवाज़ है। इनके यहाँ दुल्हिन के घर पर विवाह

न होकर दुलहा के घर पर होता है और दुल्हा के घर वालों को सारा खर्च उठाना पड़ता है।

निचली जातियों में पहले पुनर्विवाह की चलन थी लेकिन अब यह चलन धीरे धीरे कम होती जा रही है।

वेष-भूषा—हिन्दुओं की वेश भूषा बंगाल के हिन्दुओं की ही भाँति है। मुसलमान लुंगी पहिनते हैं। ये लुंगियाँ रंग विरंगी धारियों की होती हैं। औरतें अधिकतर धोती या साड़ी पहिनती हैं।

खान-पान—इस ज़िले के लोगों का मुख्य भोजन चावल है। किसान साधारणतः दिन में तीन बार भोजन करते हैं। इसमें चावल का अंश सब से अधिक होता है। मछली भी ये लोग अधिक खाते हैं और वह भी इनके भोजन का मुख्य अन्श है। मुसलमान इसके अतिरिक्त मुर्गियाँ और बतक भी खाते हैं।

भाषा—यहाँ की भाषा बंगाली है। लेकिन इस सम्बन्ध में एक मनोरंजक बात यह है कि सनद्वीप में बोली जाने वाली बंगाली बोली, जिले के अन्य स्थानों की बोली से भिन्न है।

नोआखाली-दर्शन

स्वास्थ्य

लगभग ६० वर्ष पूर्व लिए गए रिकार्डों से पता लगता है कि यहाँ दस्त, आँव और ज्वर आदि की बीमारियाँ बहुत हुआ करती थीं। चेचक का भी अधिक प्रकोप रहता था। इन बीमारियों से मृत्यु भी बहुत हुआ करती थी, लेकिन अब इन बीमारियों का इतना अधिक प्रकोप नहीं रहता। चेचक के टीके प्रतिवर्ष लगाए जाते हैं इससे इस बीमारी की भी कमी हो गई है।

जन्म और मृत्यु

सन् १८६३—१६०२ में मृत्यु संख्या ३५२,५३६ थी, अर्थात् ३२'८ प्रति हज़ार प्रति वर्ष। इसके बाद ६ वर्षों तक औसत मृत्यु संख्या प्रति मील के भीतर प्रतिवर्ष २६'५ रही। १८८२ में प्रतिवर्ष प्रति हज़ार मृत्यु संख्या २१'३ रही।

सन् १८६३ से १६०२ तक जन्म संख्या ४७५,३६६ रही। १६०८ में जन्म संख्या ५३,५८१ थी। १६०६ में जन्म संख्या बढ़ कर ५२,४४८ हो गई थी। इस वर्ष मृत्यु संख्या केवल ४२,६६६ थी।

अस्पताल—सन् १८६८ में यहां केवल ५ अस्पताल

थे। इसमें औसत से ११४ व्यक्तियों की प्रति दिन चिकित्सा होती थी। १६०८ में यहां १४ अस्पताल थे जिसमें ७२५ बीमारों की नित्य चिकित्सा होती थी। लेकिन अब इन अस्पतालों की संख्या बहुत बढ़ गई और सरकार की ओर से हज़ारों रुपया प्रति वर्ष इन अस्पतालों पर खर्च किया जाता है। व्यक्तिगत अस्पताल भी बहुत से खुल गए। अस्पतालों में भी अच्छे शिक्षित डाक्टर और सर्जन काम करते हैं। अस्पतालों के लिए अनेक सरकारी भवन भी बने हुए हैं।

कृषि और उपज

नोआखाली ज़िले का सुदूरपूर्वी भाग पहाड़ियों से घिरा हुआ है। ये पहाड़ियां देखने में बहुत सुंदर प्रतीत होती हैं। शेष भाग निचला है और चिकनी तथा उपजाऊ मिट्टी का बना हुआ है। यह भाग बीच में बहुत नीचा है और फिर चारों ओर ऊंचा होता गया है। यहाँ की भूमि नदियों की लाई हुई मिट्टी से बनी है और इस कारण से बहुत उपजाऊ है।

यहाँ की भूमि को अधिक जोतने की आवश्यकता

नहीं पड़ती। थोड़ा सा जोत देने से ही काम चल जाता है। इसलिए खर्च भी कम पड़ता है। सन् १८७३-७४ में यहां ज़िले की कुल भूमि के ७५ प्रतिशत भाग में खेती की जाती थी। सन् १९०२ तक खेतिहर भूमि में विस्तार हुआ और उस समय ७८५,००० एकड़ भूमि में खेती की जाती थी। सन् १९०७-८ में तो ८५ प्रतिशत भूमि पर खेती की जाती थी। केवल ७०० एकड़ भूमि बेकार पड़ी हुई थी तथा ३६००० एकड़ भूमि परती छोड़ दी गई थी।

चावल—चावल यहाँ की मुख्य उपज है। सन् १९०८-९ में ९६५,००० एकड़ भूमि में चावल बोया गया था। दिनोंदिन चावल की खेती में उन्नति ही हुई है। यहाँ अनेक प्रकारों का, और अच्छा धान उपजता है। सन् १९०१-२ में केवल ७८४,००० एकड़ भूमि में चावल बोया गया था।

उपरोक्त कहे गये सन् १९०८--९ के आँकड़ों से स्पष्टतः विदित हो जाता है कि इस खेती से कितना विस्तार और वृद्धि हुई है।

जूट—जूट यहाँ की दूसरी मुख्य उपज है। सन १९१० में २९,००० एकड़ भूमि में जूट की उपज की

गई थी। इस पैदावार में १२,००० टन जूट निकला था। इस वस्तु की खेती में भी बहुत तेजी के साथ विकास तथा वृद्धि हुई है।

तेल के बीज--यहाँ तेल के बीज की भी खेती बहुत होती है। इस खेती में भी बहुत विकास और उन्नति हुई है। इस समय लगभग ४५००० एकड़ भूमि में तेल के बीज की खेती की जाती है। अकेली रेंडी २२,००० एकड़ भूमि में उपजायी जाती है। इस उपज में दो हज़ार टन से लेकर तीन हज़ार टन तक रेंडी निकलती है। चावल या जूट की फसल कट जाने के बाद यह उसी भूमि में नवम्बर के महीने में बो दी जाती है और फरवरी या मार्च के महीने में काटी जाती है।

तिल—यहाँ का दूसरा मुख्य तेल का बीज है। इसकी भी खेती खूब होती है ७ वर्षों में इसकी उपज लगभग तिगुनी हो गई है। इस समय लगभग १४००० एकड़ भूमि में तिल बोई जाती है। यह मार्च या अप्रैल के महीने में बोई जाती है और मई या जून के महीने में काटी जाती है। इसका उपयोग दवाइयों और भोजन बनाने में भी किया जाता है।

सरसों की भी यहां खेती की जाती है। यह अधिकतर नदी के तटों वाली भूमि पर बोई जाती है। यह चावल या जूट की शीघ्र फसल हो जाने पर उसी भूमि में बो दी जाती है। और अक्तूबर के महीने में काटी जाती है। लगभग ८००० एकड़ भूमि में इसकी खेती की जाती है। पीली और लाल दोनों प्रकार की सरसों यहाँ पैदा की जाती है।

मसाले—लगभग १५००० एकड़ भूमि पर यहां मसालों की खेतो होती है इसमें मिर्च मुख्य है। यह छोटे छोटे खेतों में बोई जाती है, लेकिन इसकी खेतो में बचत खूब होती है।

तरकारियाँ—उपजाऊ भूमि और सिंचाई की सुगमता के कारण यहाँ तरकारियाँ भी खूब पैदा होती हैं। बैगन, कद्दू, मूली आदि यहां की पैदा होने वाली मुख्य तरकारियां हैं।

सुपाड़ी—सुपाड़ी के पेड़ जिले के लगभग सभी भागों में मिलेंगे। उत्तरो-पूर्वी और विशेषकर मेघना में इसके पेड़ बहुत अधिक मात्रा में मिलेंगे।

नारियल—नारियल के पेड़ अधिकतर सनद्वीप के मध्यवर्ती और पश्चिमी भाग में पाए जाते हैं। तालाबों

के चारों तरफ प्रायः नारियल के पेड़ खड़े हुए दिखाई पड़ेंगे। लोग कच्चे और पके दोनों प्रकार के नारियल का उपयोग खाने में करते हैं। इसका तेल भी गांवों में निकाला जाता है। नारियल की खपड़ी हुक्का बनाने के काम में लाई जाती है। नारियल के पेड़ों के साथ ताड़ के पेड़ भी पर्याप्त संख्या में देखने को मिलेंगे। खजूर के पेड़ भी बहुत बड़ी संख्या में मिलेंगे। इसका रस ताड़ी बनाने के काम में लाया जाता है।

मवेशी—यहाँ मवेशी बहुत बड़ी संख्या में नहीं पाले जाते। फिर भी बंगाल के अन्य भागों की अपेक्षा यहाँ अधिक मवेशी देखने को मिलेंगे। लगभग २०० एकड़ भूमि में चरागाह हैं। इनको धान की भूसी आदि भी खिलाया जाता है। मवेशियों के लिए यहाँ एक अस्पताल भी है।

नोआखाली-दर्शन

यातायात के साधन

१८ वीं शताब्दी में यहां बहुत कम सड़कें थीं और कुछ थोड़ी बहुत कच्ची-पक्की सड़कें थीं, उनकी दशा बहुत ही खराब थी। आने जाने और माल ले आने और ले जाने में लागों को कष्ट तो होता ही था, माल्टरी को भी सड़कों के अभाव के कारण बहुत कष्ट उठाना पड़ता था। चटगांव से माल्टरी के अधिकारी बार बार इस ओर ध्यान आकर्षित करते थे और नई सड़कों के बनने पर जोर देते थे। इस समय सड़कें तो काफी बन गई हैं, लेकिन उनकी दशा संतोषप्रद नहीं है। उन पर पुलों की भी बहुत कमी है। ऐसे स्थानों पर नावों की सहायता ली जाती है।

सड़कों के अतिरिक्त नदियों और नहरों द्वारा भी यातायात होता है। लेकिन वर्षा के दिनों में बहुत कठिनाई होती है। नदियों में बाढ़ आ जाती है। और नावों द्वारा माल ले आना और ले जाना सुरक्षित नहीं रहता। नदियों के बाढ़ के फल स्वरूप तथा अधिक वर्षा होने के कारण नहरों में भी बाढ़ आ जाती है। इसलिए वर्षा के दिनों में व्यापार में बहुत रुकावट आ जाती है

और नावों द्वारा व्यापार तो करीब करीब रुक ही जाता है।

सन् १८९६ में चटगांव से लकसाम तक आसाम-बंगाल रेलवे की शाखा बनाई गई थी। बाद में सन् १९०३ में लकसाम से नोआखाली तक इसकी एक और शाखा निकाली गई। इन दोनों लाइनों को यात्रियों तथा माल लाने और भेजने, दोनों कार्यों के लिए काम में लाया जाता है।

व्यापार और उद्योग धन्धे

यहाँ लोग अधिकतर खेती करते हैं और यही उनका मुख्य व्यवसाय है। जिन लोगों के पास खेत नहीं है वे किराए पर खेत लेकर जोतते-बोते हैं अथवा खेतों में मजदूरी करते हैं। बहुत थोड़े लोग अन्य व्यवसायों में काम करते हैं। लगभग २५००० व्यक्ति अन्य उद्योग धन्धों तथा इन व्यवसायों में मजदूरी करते हैं।

पहले यहाँ नमक बनाने का काम बहुत होता था। प्राचीनकाल में नमक बनाने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था

और न तो नमक बनाने के लिये किसी प्रकार का कर ही देना पड़ता था। अंग्रेजों ने इस व्यापार से लाभ उठाना चाहा और धीरे धीरे इस स्वतन्त्र व्यवसाय पर रोक लगाने लगे। अब कुछ कम्पनियाँ हैं जो नमक बनाने का काम करती हैं और उन्हें सरकारी लाइसेंस लेना पड़ता है तथा सरकार को कर देना पड़ता है।

यहाँ मछली पकड़ने का काम बहुत बड़ी मात्रा में होता है। मछलियाँ अनेकों प्रकार की पाई भी जाती है। उनके प्रकारों का उल्लेख हम प्रथम अध्याय में कर चुके है। लोग इन मछलियों को बड़ी मात्रा में बाहर भी भेजते हैं।

यहाँ पहले थोड़ा बहुत कपड़ा बुनने का काम भी होता था। बाद में कुछ कपड़े की मिलें भी खुलीं। लेकिन यह उद्योग यहाँ अधिक उन्नति नहीं कर सका है। इन मिलों का कपड़ा मजबूत भी नहीं होता और उसकी लम्बाई-चौड़ाई भी बहुत कम होती है।

एक लोहे का भी थोड़ा बहुत कारबार होता है। एक लोहे का कारखाना भी है जिसमें सात-आठ सौ आदमी काम करते है। तांबे और जस्ते का काम बहुत कम होता है और यह काम होता भी खराब है।

———

शिक्षा

यहां शिक्षा अधिक नहीं है। सन् १६०१ में केवल २,२१० व्यक्ति ऐसे थे जो अंग्रेज़ी पढ़ लिख सकते थे। पिछले पन्द्रह वर्षों में शिक्षा का अधिक प्रसार भी नहीं हुआ है।

यहाँ पाँच हाई स्कूल हैं। ५५ अंग्रेजी और वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल भी हैं यहां १३३ ऊपर प्राथमिक स्कूल भी है जिसमें लगभग साढ़े आठ हजार विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त ११२४ लोअर प्राथमिक स्कूल हैं। इनमें लगभग चालीस हज़ार विद्यार्थी प्रतिवर्ष शिक्षा पाते हैं। यहां ३०७ प्राथमिक महिला स्कूल भी है जिनमें लगभग साढ़े सात हज़ार बालिकाएँ शिक्षा पाती हैं।

शासन

नोआखाली बंगाल का एक नियमित जिला है और वहां बंगाल के कानून लागू होते हैं। यह जिला कई थानों में विभाजित है और यहाँ लगभग तीन हज़ार गाँव हैं। इन गाँवों से लगान वसूली का काम जमींदारों

द्वारा होता है। गाँवों में सरकार की ओर से नियुक्त पटवारी भी होते हैं।

प्रत्येक थाने में कुछ पुलिस भी होती है। सन् १८६० में यहाँ १६४ सिपाही और ३७ पुलिस अफसर थे। सन् १६०८ में यहां एक पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट, ३ इन्सपेक्टर, २४ सब-इन्सपेक्टर, ३६ दीवान और २४२ सिपाही (कान्सटेबिल) थे।

यहाँ लोग नशा बहुत कम करते हैं। इसलिये नशे के कर द्वारा आमदनी भी बहुत कम होती है। सन् १८६२-६३ में १७,६६१ रुपयों की इस कर द्वारा आमदनी हुई थी। सन् १६०८—६ में यह आमदनी बढ़ कर २४,७७२ रुपए हो गए थे।

स्वायत्त शासन

यहां केवल एक म्यूनिस्पैल्टी है। यह म्युनिस्पैल्टी सुधराम में है। यह सन १८७६ में बनी थी और इसमें १२ सदस्य होते थे।

नोआखाली के जिला बोर्ड में १३ सदस्य हैं। लगभग प्रत्येक माह बोर्ड की बैठक हुआ करती है बार्ड में आने से पूर्व प्रस्तावों पर एक समिति विचार करती है।

———